गंगे माँगे पुकार तोरी,
तू पावन भये तो क्या करे...

गंगे माँगे पुकार तोरी, तू पावन भये तो क्या करे।
शिव बनने की चाहना है, तो कह दो पावन तू कर दे।।१।।

विष पियें शिव देख ज़रा, कंठ पे सर्प रे लिपटे रहें।
फिर भी सुख सब को रे दें, क्षति किसी की नहीं करें।।२।।

लाख भुलाये जीव उन्हें, लाख उन्हें ठुकराया करे।
बार बार बहु बात कही, दिल उनका रे तोड़ दे।।३।।

शिव शिव कही देख जहान में, क्या क्या होता रहता है।
जो भी नाता बंधु तेरा, वह ही रोता रहता है।।४।।

कोई कुछ भी तुझे कहे, तब भी मुसकान रे मुख पे हो।
यह चाहना गर हृदय में हो, तो गंगे को पुकार रे लो।।५।।

गर आपुनो स्थापति चाहते हो, गंगे से मत बात करो।
गर शिव धरती पर लाना है, तो गंगे का तुम नाम लो।।६।।

हो पुकार तोरी साचो मना, उत्स तलक यह ले जाये।
सच मानो कहूँ अनुभव से, शिव बना गंगा पाये।।७।।

परम पूज्य माँ द्वारा
'गंगा' के प्रति श्रद्धांजलि
(अर्पणा प्रकाशन - 'गंगा श्रद्धा प्राणप्रद')

अनुक्रमणिका

३ **कहीं तो जा... यह आप में ठौर पा ले!**

श्रीमती पम्मी महता

७ **'...आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु
जुगु एको वेसु।'**

अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१३ **'जीना वह ही जीना है, जो औरों को
जीवन देता है।'**

श्रीमती कपूर

१७ **'पूर्ण वस्तु रूप है जो,
हर रूप रे उसका है!'**

'मुण्डकोपनिषद्' में से

२१ **प्रेम एहसान नहीं जताता!**

श्रीमती पम्मी महता

२५ **'कैसे ध्यान लगायें राम,
मोरे बस की बात नहीं...'**

पिता जी के प्रश्नोत्तर

३१ **'...यज्ञो दानं तपश्चैव
पावनानि मनीषिणाम्।'**

अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता -
भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

३५ **श्रद्धांजलि**

विष्णु प्रिया महता

३६ **अर्पणा समाचार**

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

**श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा ९ मार्च २०१७ को प्रकाशित तथा
सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित**

'कहीं तो जा... यह आप में ठौर पा ले!'

श्रीमती पम्मी महता

मेरी अंतर की वेदना को, हे श्री हरि माँ, आपके सिवा और कौन समझेगा? मेरे हृदय से अपने भावों को स्वयं ही बहाते हो और आप ही अनजान बन जाते हो... मैं इस सत्य को कभी नहीं भुलाती कि कोई मेरे बहुत अपने हैं व बहुत ही प्रिय भी हैं जो मुझ पर अपनी करुण-कृपा बरसा रहे हैं!

मेरे जीवन में, अपने सान्निध्य में रख कर, अपना प्रेम बरसा रहे हैं... आप श्री हरि माँ को आश्चर्यचकित होई देखती रहती हूँ! कितने वेष में आप उतर कर इस हृदय को संजोते हैं व अपने क़दमों से ही नवाज़ते हैं! धन्य हैं हे श्री हरि माँ, कितने वेष धरी-धरी

इस जगती पर अवतरित होते हैं इस जीव जगत के लिए, और अपनी श्रद्धा-भक्ति का प्रसाद देकर हमें अनुगृहित करते हैं!

भगवान के प्रति आप ही के मुख से बहे भाव, "प्रेम भक्ति कहाँ पाऊँ मैं, प्रेम भक्ति भी तुम ही हो..." कितनी सत्यता भरी है इस आपकी वाणी में! जीव तो मंत्र-मुग्ध हो कर आपकी लीला का पल-पल दर्शन करता ही चला जाता है। यही मन ही मन प्रार्थना करती रहती हूँ, 'कहीं तो जा यह आप में ठौर पा ले...' इस हृदय वीणा पर आपके स्वर जब सधते जाते हैं, कितनी मीठी व मधुर झंकार में गूँज कर, हृदयों में आप इन्हें उतार देते हैं। बहुत ही आश्चर्यचकित होई जाती हूँ! हर पहलू में आपके दर्शन अतीव अद्‌भुत व निराले हैं। धन्य धन्य हुई चली ही चलती जाती हूँ। जीवन का हर पहलू आपके मधुर संगीत से झूम उठता है, धन्य धन्य यूँ आपसे हो जाती हूँ!

किस क़दर आपकी कशिश मुझे खेंचे लिये चलती ही चली जाती है...

हे कल्याणमयी माँ, आपके यूँ दुर्लभ दर्शन पाते हुये कैसे कैसे वहाँ खिंचे चली जाती हूँ, पता भी नहीं चलता। आप प्रभु माँ का यह अद्‌भुत व अनूठा प्रसाद बहुत ही भव्य व सुन्दर है। आपके यूँ सगुण परिवेश में उतर कर आने से ही आपकी प्रकट लीला में आपके अद्‌भुत व दिव्य दर्शन होते हैं। अति सुन्दर माँ, आप व आपकी लीला में आपका अलौकिक जीवन किस तरह सारी जगती में छा कर जीव जगत को आलोकित करता है! आपके सगुण-वेष को मेरा कोटि कोटि प्रणाम! आपकी चरण-रज सीस चढ़ाती हूँ और पुनः पुनः चढ़ाती हूँ।

हे श्री हरि माँ, आप धन्य हैं जो जीव जगत के लिए आप सगुण-वेष धर कर यूँ अवतरित होते हैं... ताकि हम सीख सकें कि जीवन कैसे जीया जाता है, जो हम भूल गये हैं। आपके जीने की अदा इतनी मनभावन है कि उसके आकर्षण में एक बार मन डूब जाये तो वहाँ से उठने को जी ही नहीं चाहता। यह है आपकी अहेतुकी कृपा, जो हम पर बरसती ही चली जा रही है। हम अपने आप से उभर कर आप में आ जायें व योग-साधना का प्रारम्भ हर पल हर जीवन में हो जाये!

कैसे आप श्री हरि माँ का धन्यवाद करूँ जो हमें अपने से कृतार्थ करने के लिए स्वयं आ गए! धन्य हैं आप व आपकी करुण-कृपा माँ! कब मेरा यह मन पूर्णतया लालायित हो कर आप ही में जा विलीन हो जाये... मैं तो यह भी नहीं जानती कि

- जिस माला को आप मेरे जीवन में गूँथ रहे हैं वह पूरी होगी भी कि नहीं...

- आप प्रभु माँ के क़ाबिल होगी भी कि नहीं...

- इसकी भी आपको कोई गरज़ नहीं...

आप तो बस अपना धर्म निभाये चले जा रहे हैं। आप माँ तो शुभ व कल्याणकारी भावना से सतत लगे हुये हैं... यह देखी देखी हैरतज़दा हो जाती हूँ। धन्य धन्य हैं आप

बाएँ से दाएँ - अन्नु कपूर, डॉ. जे. के. महता, सत्या महता, पूज्य छोटे माँ और पम्मी महता

हे श्री हरि माँ प्रभु जी! आप ही की लीला विविध रूपों में मेरे जीवन में व्यक्त हो रही है। कभी माया का वेष धरी आपने मुझमें मेरी ही 'मैं' का विस्तार किया, क्योंकि अव्यक्त मन अपने को यूँ ही व्यक्त करी करी वहीं अपनी 'मैं' में उलझ कर रह गया! कैसे-कैसे इस 'मैं' विस्तार होता ही चला गया व आप श्री हरि माँ से दूर होती गई...

आप की असीम कृपा हुई जो आपने मुझे बुला कर, मेरी 'मैं' को rub off कर दिया। इस काली स्लेट पर आपने अपना नाम लिख दिया! इतना सुन्दर व प्यारा नाम देख कर आपका, माँ, आपने मुझे आत्मविभोर कर दिया! आपके इस असीम अनुग्रह व प्यार को देखी देखी, आपके सिजदे में झुक गई। ऐसी अद्वितीय कृपा... जहाँ इसी को अपनी अद्‌भुत लीला के दर्शन देने लगी। मैं बड़ी ख़ामोशी से आपको निहारती ही चली गई, मैं वहाँ द्रष्टा मात्र ही तो थी। आप ही अपने खेल-खेल में मुझे निहाल करते चले गये।

आप माँ रूपरहित हैं, फिर भी आपने इतने रूप धरे जो मुझे मंत्र-मुग्ध करते व करते ही चले गये... मेरी अंतर की मलिनता को यूँ ही धोने लगे। आपका कहा बार-बार याद आता, "देख! जब तू उत्तर की ओर बढ़ेगी तो दक्षिण स्वयं ही छूट जायेगा।" कितना आश्वासन था इन कहे आपके शब्दों में! मुझे आपने अपने में टिका लिया। यह तो मैं भूल ही गई कि मेरा तो कोई आस्तित्व ही नहीं... जहाँ आप बस गये वहाँ और कुछ रह ही नहीं जाता!

अद्भुत! अतीव अद्भुत! मैं तो यूँ ही इठलाती रही... तभी रफ़्ता-रफ़्ता आपने अपने क़दम इस मनोधरा पर रखने शुरु कर दिये। वहाँ तो आपकी शोभायात्रा की झाँकियाँ मुझे लुभाती ही चली गईं। मन कहीं और देखता ही नहीं था। आप माँ का अद्भुत व प्यारा आकर्षण मुझे इस क़दर लुभाये रखता कि इधर उधर देखने की फ़ुर्सत ही नहीं देते थे आप...

आपके इस असीम अनुग्रह ने न जाने कितने जन्मों के बाद यह सुनहरा अवसर दिया है, इसे खोना नहीं चाहती! जिस तरह इस मेरे अंतरमन को आपने लुभाया है, उसका कोई सानी नहीं है। आपकी करुण-कृपा का यह दिव्य प्रसाद पा धन्य धन्य हुई रहती हूँ! आपके निरन्तर बहाव को बहते हुये देखती हूँ, तो सच माँ, इस बहाव की निरन्तरता में खोई रहती हूँ। आप से पाये अंतर के इस महौल को मंत्र-मुग्ध हुई देखती ही रह जाती हूँ।

कैसी सुन्दर अदा है जीवन जीने की,

इस अदा आपकी पर निहाल हुई रहती...

एक पल का वियोग भी मेरे लिए असहनीय हो जाता...

मन ही मन यही दुआ करती, जिस तरह आप मुझे चलाये लिये जा रहे हैं कि 'यारब! मेरे को इस क़दर ले जाते हुये अपने में ही विलीन कर लेना, जो माटीवत् जीने का सौभाग्य पाये रहूँ! आमीन!'

आपसे दूरी मुझे तड़पाती रहती है। हे भगवन्, हे श्री हरि माँ, जिस तरह जग वैभव में भागीदार बना रहा यह मन, हे श्री हरि नाथ, अपनी प्रीत का भागीदार बनाये रखिये! जो आपकी प्रीत मेरी प्रीत ही हो जाये! बिलकुल selfless जीवन... मेरा मुझमें कुछ न रहे। रहें रहें तो आप माँ ही रहें! हे श्री हरि माँ, अपनी इस कनीज़ पर यूँ ही करम फ़रमाइये! हे मेरे नाथ, आपने अपने अनगिनत पहलुओं से इस मन को सजाकर कितना कुछ दिया है। हे श्री हरि, इस हृदय को अपनाये करी इसे अपना भक्त हृदय बना लीजिये, जिसमें केवल आप ही आप बसते हों!

आइये, पूर्ण मिलन के लिए ही इसे लिवा ले जाइये! मुझे पूर्ण आस्था है कि आप स्वयं ही इसे लिवा ले जायेंगे। हे मेरे परम प्रिय प्रभु जी, मेरे जो परम पूज्य भी हैं, मुझे लिवा ले चलियेगा! आप तो सच ही सर्वप्रिय हैं। हर कोई आप ही की ओर अग्रसर हो रहा है।

हे कर्तार, हे आनन्द रससार, आइये, मेरे इस रिक्त पात्र को अपने से ही परिपूर्ण कर लीजियेगा! करुण-कृपा मुझ पर निरन्तर बरस रही है आपकी और आप ही ने इसे परिपूर्ण करने का बीड़ा भी उठाया है... इसलिए मेरा सविनय निवेदन भी है और असीम प्रेम से अनुरोध भी है कि इसे आप पूर्ण मिलन के लिए तैयार कर लीजियेगा!

अब इससे कम कैसे माँगूँ, इतने जन्म गँवा लिए!

अब के नहीं मेरे प्रभु जी... अब के नहीं..! ❖

...आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु।

गतांक से आगे–

पौड़ी ३०

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु।
इकु संसारी इकु भण्डारी इकु लाए दीबाणु।
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु।
औहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु।
आदेसु तिसै आदेसु।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु।।३०।।

शब्दार्थ : एक ब्रह्म के साथ मिलकर माया प्रसूता हुई। उस से तीन प्रसिद्ध शिष्य पैदा हुए। एक सृष्टि को बनाने वाला ब्रह्मा, एक भण्डारे का मालिक विष्णु और एक दरबार लगाने वाला अर्थात् न्याय करने वाला शिव। जैसे उस की इच्छा है, वैसे वह उनको चलाता है, जैसे उसकी आज्ञा होती है

वैसे ही यह सृष्टि चलती है। वह सब को देखता है, पर वह नज़र नहीं आता, यही बड़ा आश्चर्य है। उसको नमस्कार है, उसको नमस्कार है - जो सृष्टि का आदि है, रंग रूप रहित है, आदि रहित तथा नाश रहित है और युगों युगों में एक रूप है।

परम पूज्य माँ :

क्या जाने क्या युक्ति करी, माया मायिक योग हुई।
तीन महान शिष्य जन्में, त्रैलोक उत्पन्न तब हुई।।१।।

इक संसारी इक भण्डारी, इक मौनी कर्मफल देई।
पर इक के पाछे आप खड़ा, होये जो हुकम वह देई।।२।।

वह सब देखे पर नज़र न आये, प्रमाण मौन में सब देई।
महा आश्चर्यमय महिमा उसकी, ठौर न पाए वा कोई।।३।।

नमस्कार करूँ बार बार, तू अनादि तू अनन्त होई।
क्षतिरहित अविनाशी तू, जुग जुग एक रूप होई।।४।।

एक रूप अखण्ड सत्, अद्वैत तत्व अनन्य रूप।
केवल एको अव्यय सत्, सत्‌नाम स्वरूप ओंकार रूप।।५।।

निहित तत्व तू आप है, केवल सत्त्व तू आप है।
अखण्ड एको आप है, निराकार तू आप है।।६।।

निर्गुण तू आप है, वाक् परे तू आप है।
अखिलपति तू आप है, निरंजन एको आप है।।७।।

अखिलपति तू अखिल रूप, अखिल परे तू आप है।
तू उभरे हर रूप धरे, फिर रूप मिटे रहे आप है।।८।।

विश्वपति विश्व कारण, विश्व रचयिता आप है।
पालन पोषण आप करे, फिर जाये मिटे भये आप है।।९।।

आप से आप ही उभर पड़े, फिर ख़ुद में समाये आप है।
और कछु कोई है ही नहीं, अखण्ड केवल आप है।।१०।।

त्रिगुणात्मिका शक्ति तू, विशुद्ध परम तत्व आप है।
दिव्य विशुद्ध आत्म स्वरूप, अखिल रूप तू आप है।।११।।

अखिल प्राण आधार है तू, अखिल रूप संसार है तू।
विश्व रूप यह आप है तू, नित्य प्रकाश भी आप है तू।।१२।।

चेतन एको जगदेश्वर, विश्वपति तू आप है।
कौन नाम तेरा मैं लूँ, अखण्ड एक तू आप है।।१३।।

नियमन्कर्ता ईषणकर्ता, पोषणकर्ता आप है।
तू भण्डारी तू संसारी, कर्मफल दे तू आप है।।१४।।

नियमन्कर्ता अनुमन्ता, कारण भी तू आप है।
उत्पत्ति स्थिति लय कारण, बस भगवन् तू आप है।।१५।।

तेरी लीला जग सारा, लीला कर्ता आप है।
आप रचे फिर आप ही पाले, फिर न्याय करे तू आप है।।१६।।

जुग जुग में एको भेस तेरा, पर अखिल भेस तू आप है।
एको निरंजन निराकार, हुकम चलाये आप है।।१७।।

क्या गुण गाऊँ क्या कहूँ, मुझे तो तुझपे नाज़ है।
मेरे मालिक मेरे दाता नानका, मेरा एक आसरा आप है।।१८।।

इल्तिजा करूँ चरण पड़ी, मैं तो सीस झुका के कहती हूँ।
मैं तो चरण रज भी तोरी नहीं, इक ज़र्रा मात्र हूँ कहती हूँ।।१९।।

पर बेबसी मेरी देखो, रहमत करो प्रभु मुझपे तू।
समझ के समझ ही न पाऊँ, पर आसरा एको नानक तू।।२०।।

दामन फैला तेरे चरण पड़ी, इतनी इनायत हो जाये।
तेरी मेहर की नज़र जो हो जाये, बेसमझी समझ हो जाये।।२१।।

तू ग़रीबनवाज़ परवरदिगार, बस इतना करम तेरा हो जाये।
अनुकम्पा तेरी हो जाये, शरणा तेरी मुझे मिल जाये।।२२।।

पापविमोचक दुःखविमोचक, दुःख हरण मेरा हो जाये।
'मैं' के रहे कहाँ सुख मिले, मन तेरी शरण में खो जाये।।२३।।

बस एक है तू मेरा मन भी है तू, यह तन तेरा तेरा हो जाये।
यह रोम रोम हर अंग तेरा, अब चरण का ज़र्रा हो जाये।।२४।।

बिनती मानो मानो मोरी, मानो नानका बिनती मोरी।
चरण पड़ी मैं अज तोरी, मानो बिनती नानक मोरी।।२५।।

तू कहे सब है कर्तार, आँख खुले जानूँ तोरी।
अखिल रूप है महाराज, अब दर्शन होये सब में तोरी।।२६।।

अर्ज़ मेरी इतनी सुनो, महिमा सुनी आई तोरी।
नानक नाम मेरे साईं का, बात सुनी शरणी पड़ी।।२७।।

नानक मोरे महाराज, सुनो मोरी आज आवाज़, तोरे मैं चरण पड़ी।
तू है ग़रीबनवाज़, तू है परवरदिगार, नानक तोरे मैं चरण पड़ी।।२८।।

श्रीमती देवी वासवानी : गर तू ही संसारी है, तू ही भण्डारी है, तो कर्मफल कहाँ से आ गया?

परम पूज्य माँ : भगवान ने संसार रचा, अखिल रूप वह आप भया। अब उन्होंने दुनिया बनाकर हमें बड़ी भारी आज़ादी दे दी। उन्होंने कहा - 'देखो! जो तुम्हारा जी चाहे करो!' उन्होंने हमारे लिये सारा कुछ रचकर, हमें आज़ादी दे दी और कहा - 'जो जी चाहे, सो करो।' वह आज़ादी किसकी? हमें यह भूल गया कि यह आज़ादी हमें उनके काम में लेनी थी। हमें उनके हुकम में, उनकी रज़ा में रहना था, हम यह भूल गये, हमारे से ग़लती हो गई।

कर्मफल इसलिये मिला कि उससे नफ़रत करी। जो मिला, उस पर कृतघ्नता करते रहे, मन में उद्विग्नता लाते रहे। हमने बैठकर, आनन्दविभोर होकर, प्रभु का गुणगान नहीं किया! बल्कि जो मिला -

- हमने कहा - 'और चाहिये...'
- जो नहीं मिला-
- हमने कहा - 'क्यों नहीं मिला?'

जो हमें साधु-सन्त मिला, उसे हमने तड़पा दिया। जहाँ उसने सच बोला, वहाँ हमने झूठ कर दिया, जहाँ किसी ने झूठ बोला, वहाँ झुक गये। चारों तरफ़ जो उसका रूहानी जलवा था, उसका जो सौन्दर्य था, उसके प्रकाश को कुचलने की कोशिश की। उसमें हम 'मैं' ले आये। यह 'मैं' ही सबसे बड़ी भूल है- इसलिये हम भगवान से बैठकर इतना ही कहते है :

कुछ तो करो मेरे मालिका, इज़हार तुम्हारा हो जाये।
यह 'मैं' मल मेरी दूर होये, दीदार तुम्हारा हो जाये।।१।।

तू निरंजन है मैं तो अंजन हूँ, अंजन का मंजन हो जाये।
गर इक इशारा तेरा हो, तो यह भी नज़ारा हो जाये।।२।।

प्रकाशमय पुरनूर तू, नानक यह इशारा हो जाये।
गर चरण तेरा मेरे हृदय बसे, तो दीदार तुम्हारा हो जाये।।३।।

यह दिले बेक़रार सुकून पाये, गर दिल ही तुम्हारा हो जाये।
मोहताज दुःखी अपावन यह, तेरे आये उद्धार भी हो जाये।।४।।

तू तरस ही खा मेरे मेहरबान, मन में विभोर यह हो जाये।
प्रेमातुर मेरा मन भये, और तेरे चरण में खो जाये।।५।।

हे मालिक इतना ही माँगूँ, बस केवल तू ही रह जाये।
कालिमा तो मेरा 'मैं' ही है, 'मैं' जा पे तू ही बस जाये।।६।।

यह राग द्वेष मेरे पल में मिटें, गर दीदार तेरा हो जाये।
गिले शिकवे यह मन ही मिटे, गर प्यार तुझी से हो जाये।।७।।

ओ मेरे मालिका ओ मेरे नानका, ख़ुदावंद ज़हूर तू हो जाये।
यह नक़ाब उठे इक पल को सही, और मेरा दिल तेरा हो जाये।।८।।

पर अपावन दिल तुझे न चाहे, तू सब करे न याद करे।
सब तेरा है नित भूले यह, सब तू ही है न मान सके।।९।।

मेरा अपना कहे जो अपना नहीं, यह सपना ले जो अपना नहीं।
यह मेरा कहे जो मेरा नहीं, तेरा कहे जो तेरा नहीं।।१०।।

उलटी दुनिया में मन यह बसे, उलटी बातें यह 'मैं' ही करे।
आज इतना माँगूँ मेरे आक़ा देख, साँचो बात मन यह करे।।११।।

सब तू ही है सब तेरा है, यह मान ले तो फिर तेरा भये।
जानूँ कर्म सब तेरा रहे, मनोकर्म मेरा मिटे।।१२।।

तेरा हुकम होये तेरी रज़ा चले, सब तू ही है सब तू ही रहे।
संसारी तू भण्डारी तू, दीवान तेरा नित लगा रहे।।१३।।

न्यायाधीश है न्याय भी तू, जो तू ही कहे वह हुआ करे।
पर मन बैरी जहाँ आ बसे, यह तुमसे भिड़े वह कर्म भये।।१४।।

यह कर्म तो केवल इतना ही है, तेरा हुकम यह कबहुँ न मान सके।
हुकम अदूली नित्य करे, नहीं तो तेरा विनाश चाहे।।१५।।

चाही के विनाश मेरे मालिक, मैं पाप गर्त हुई जाती हूँ।
नामोनिशान तेरा मिट जाये, 'मैं' की राही यही चाहती हूँ।।१६।।

मैं बहुत चतुर बहु बलवान, बहु धनवान कहे जाती हूँ।
तेरा सब कुछ ले करके, निज नाम भरे वहाँ जाती हूँ।।१७।।

पर जान करी बेबस होई, अज फिर भी तुझे मैं बुलाती हूँ।
ओंकार तेरा नाम है नानक, मैं नानक को ही बुलाती हूँ।
ग़रीबनवाज़ मैं ग़रीब ही हूँ, केवल रहमत तेरी चाहती हूँ।।१८।।

तेरा करम गर हो जाये, मेरा कर्म इक नहीं रह पाये।
निरंजन अंजन तोरी मिले, अंजन मेरी भी धुल जाये।।१९।।

मुझे नाम का प्याला नानक दे, तेरा नाम मुझे अब मिल जाये।
हृदय में गर तेरा नाम बसे, विपरीत भाव मेरा धुल जाये।।२०।।

ओ नानक मुझको नाम ही दे, तेरे चरण की धूलि मिल जाये।
हुकम अदूली नाफ़रमानी, पल में सारी मिट जाये।।२१।।

क्रमशः

❖ ❖ ❖

Form IV (See Rule 8)

1. Place of Publication: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
2. Periodicity of Publication: Quarterly
3. Printer's name: Mr. Ajay Mittal Nationality: Indian
   Address: Sona Printers Pvt. Ltd., F-86/1 Okhla Industrial Area, Phase I, New Delhi 110020
4. Publisher's name: Mr. Harishwar Dayal Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
5. Editor's name: Ms. Poonam Malik Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital: Arpana Trust.

I, Harishwar Dayal, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Harishwar Dayal
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana

‘जीना वह ही जीना है,
जो औरों को जीवन देता है।’

(यह लेख श्रीमती शीला कपूर द्वारा कई वर्ष पूर्व अर्पणा पुष्पांजलि के लिये लिखा गया था)

परम पूज्य माँ के साथ पुस्तकें दिखाते हुए श्रीमती शीला कपूर और श्रीमती कमला भंडारी

‘माँ’, शब्द हर जीव के लिये हर भाषा, हर देश में सम्भवतः सर्वप्रिय शब्द है। संस्कृत भाषा में उसका विवरण और भी सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है ताकि इस शब्द की विलक्षणता एवं मनमोहकता का कारण भी जाना जा सके। ‘मा’ का अर्थ है ‘नहीं’ अर्थात् ‘मैं नहीं हूँ।’

देखा जाये तो शिशु के गर्भ से निकलते ही माँ अपने को पूर्णतया भूल कर शिशु पर पूर्णरूप से समर्पित हो जाती है। उसी के लाड़-चाव में न उसे दिन याद रहता है और न रात! न खाना-पीना और न सोना! जो उसके लिये महत्त्वपूर्ण रह जाता है, वह है अपनी व्यक्तिगतता का पूर्ण अभाव...!

नवजात शिशु के सुख अर्थ ही हर कर्म, हर भाव होता है। उसके जीवन का प्रथम ध्येय उसका शिशु बन जाता है। ऐसी अवस्था में कह सकते हैं कि वह ‘मैं’ रहितता द्वारा

उस सुख और आनन्द का अनुभव करती है जो संत लोग ईश्वर भक्ति में लीन होने पर करते हैं। यही कारण है कि माँ, माँ ही रहती है चाहे शिशु कितने ही उपद्रवी अथवा कष्टप्रद क्यों न हों...'

आज हम एक ऐसी अनुपम 'माँ' की बात कर रहे हैं जो जन्मदायिनी न होते हुये भी मातृत्व का धर्म ऐसी दिव्यता से निभाती चली जा रही हैं। सभी शिशु, जिन्होंने उस मातृ-प्रेम का मधु चखा है, गदगद हो कर भगवान के मन्दिर में सीस झुकाये बैठे हैं एवं एक ही तड़प लिये पुकार रहे हैं कि 'भगवान! हमें इस योग्य बना दो कि ऐसी अलौकिकता का प्रकाश पा कर, ऐसी स्नेहमयी माँ के आग़ोश में पल कर हम भी अपना जीवन सार्थक बना सकें।'

यहाँ केवल शास्त्रों का पठन ही नहीं अपितु पल-पल पर उस करुणामयी के कर्मों द्वारा उस दिव्यता के दर्शन हैं जो हम जैसे कलियुगी मनों को पुकार-पुकार कर ललकार रहे हैं, 'अपनी 'मैं' से हट कर जीना सीखो! जग-जहान की सेवा करो! निष्कामता में रमण करो! यज्ञमय भावों से अलंकृत हो जीते जी अमृत-पान कर लो!'

ऐसी करुणामयी माँ के दर्शन पा कर हम कृत-कृत तो हो जाते हैं किन्तु उस उच्चत्तम स्तर का शिखर बहुत दूर होने के कारण कुछ निराश से हो जाते हैं। इस जन्म का सौभाग्य सराहते हुये कुछ खेद भी होता है कि हम उस से पूर्ण लाभ न उठा सके।

इस करुणा के सागर की लहरियाँ अनगिनत हैं। एक तन के जैसे हज़ारों रोम होते हैं, उनके जीवन के वैसे ही भिन्न भिन्न रंग हैं। यह दैवी करुणा का सागर रोम-रोम को लोरियाँ दे दे कर प्रशान्त करता हुआ क़दम-क़दम आगे बढ़ाता चला जा रहा है। मन रूपा शिशु तो अपने पूर्व स्वाभाविक संकल्प एवं सिद्धान्तों में जकड़ा हुआ, अवरोध की सीमा का उल्लंघन न होने देने पर तुला रहता है एवं पूर्ण शक्ति लगा कर निज व्यक्तित्व का संरक्षण करता है।

पर क्या कहें इस दिव्य चक्षु, दूरदर्शी माँ की ईश्वरीय शक्ति के प्रसाद रूप को, जो अलौकिक पूजन की करुणा के ज्वार-भाटा में प्रत्येक विघ्न को बहा ले जाता है। मनुष्य स्तब्ध सा रह जाता है यह जानते हुये कि यह 'मैं' नहीं... जो आज मैं हूँ यह किसी और की सत्ता मुझ में से बह निकली है। क्योंकि मैं तो आजीवन अपने संग में रही हूँ, अपने को तो जानती ही हूँ। मैं इतनी उदार कहाँ, जो अपनी व्यक्तिगतता को कभी उल्लांघ पाती, किन्तु कोई ऐसा प्रवीण निकला जो पलक झपकते ही मुझी को मुझी से बेगाना बना कर उड़ा ले गया।

जग में ज्ञान की कमी नहीं, किन्तु वह ज्ञान उसी वक्त का निजी धन बन कर रह जाता है क्योंकि यह ऐसी स्थूल वस्तु नहीं जो दान में दी जा सके। सात्त्विक गुण ग्रहण करना अथवा स्वयं ही ज्ञान की जीती जागती प्रतिमा बनना ही शास्त्र ज्ञान की सार्थकता प्रकट कर सकता है। किन्तु कलियुग में जब प्राणी अपने अपने स्वार्थ में डूबे केवल द्रव्य का ही मूल्य

धरते हैं, तो उन्हें यह ज्ञान होना भी कठिन है कि ज्ञान कैसी अमूल्य निधि है। केवल शब्दों में ही नहीं बल्कि जीवन राही उसका प्रयोग करना अनिवार्य है।

धन्य है हमारा सौभाग्य एवं धन्य हैं पूज्य माँ जिन्होंने शास्त्रीय ज्ञान को अपने जीवन में जीकर न केवल हमारी आँखों के सामने सत्य दिखा दिया अपितु हमें लालायित कर दिया कि 'जीना वह ही जीना है, जो औरों को जीवन देता है।' जब मन प्रलोभित हो उठे तो इस में वह शक्ति है जो एकाग्रता राही नियंत्रित करके यह मनोलुभावनी ध्येय के पीछे चल पड़ता है।

सत्य क्या होता है - इसकी रूप-रेखा हमने पहली बार पूज्य माँ की जीवनी राही ही अनुभव की। हमें लगता था कि 'मैं' जो भी करती है, सत्य ही करती है, सत्य ही कहती है, क्योंकि मेरे जैसा जग में सत्यवादी कोई और है ही नहीं। ज्ञान की खड्ग से माँ ने इस भाव को ऐसे जड़ से उखाड़ा तो पता चला कि हम तो जीते ही झूठ पर हैं।

परम पूज्य माँ, श्रीमती शीला कपूर और अन्य परिवार के सदस्यों के साथ होली खेलते हुए

जब तक तन को अपना कर उसके पूजन राही, मैं के दृष्टिकोण से ही पूर्ण जग को निरखते हैं, तब तक हमारा दृष्टिकोण समष्टि हो ही नहीं सकता। झिझक कर अंर्तमुखी हुये तो देखा जो वह कह रहे हैं, अक्षरशः सत्य है। इस असत्य को ही पकड़ में लाना सबसे बड़ा सत्य है। जब यह जान कर जीने का ढंग बदला तो सुखी हो बैठे। जब पर-दोष-दर्शन त्याग कर हम अपनी त्रुटियाँ देखने लगेंगे तो सुखी हो जायेंगे। औरों के प्रति क्षमाशील हो जायेंगे। जब अपने को देखा तो जाना कि अपने में भी नौ सौ छिद्र हैं।

प्रेम एक ऐसा अनुपम गुण है, जो संसार के हर प्राणी को, चाहे राजा हो या रंक, बहा कर ले जाता है। फिर संतों के प्रेम का तो कहना ही क्या - जो पूर्णतया मोह रहित व अहं रहित होता है तथा केवलमात्र निःस्वार्थ रह कर दूसरे को ऊपर उठाने हेतु होता है। ऐसी झलक हमने 'अर्पणा' में 'पूज्य माँ' की जीवनी राही दिन-प्रतिदिन देखी है... अनुभव की है।

यह प्रेम पावनी गंगावत् बह रहा है - एक के लिये भी वैसा ही, जैसा अनेकों के लिये, कोई भेदभाव नहीं! यह शीतल मंद-मंद मुसकान शांत सरोवर की न्याई हर विपदा को हर लेती है। माँ के दर्शनों से ज्ञात हो जाता है कि शरण पड़े को उन्होंने पूर्णतया ढाढ़स देनी है, अपनाना है, उसकी चिन्ताओं व समस्याओं को, अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करके, अपना तन-मन-धन सब दाँव पर लगा कर, उसके दुःख का निवारण करना है।

अध्यात्म क्या है? उसका जीवन में रूप क्या है? हमने पूज्य माँ की नित्य प्रति दिन की जीवनी को निरख कर जाना है। इसी तत्व में जीना, इसी का स्मरण करना, इसी का अभ्यास एवं इसी में निरन्तरता लाना... हम 'अर्पणा' वासियों का एक मात्र ध्येय है।

हम जैसों में त्रुटियाँ अनेकों है किन्तु माँ की करुणा इतनी हुई कि दिन में सौ बार तात्विक पथ से चूक कर भी, आन्तर की आवाज़ बोल ही उठती है। वह जीवन का प्रयोजन सामने ला धरती है... सत्-असत् का भेद दर्शाती है... माँ की पावन चरण-रज को माँग में भरती है... इतनी महान करुणा धारा एक महान महापावन निर्मम, निरहंकार, निःसंग माँ के विशाल हृदय से ही फूट सकती है। इस सौभाग्य को पा कर हम भगवान से और माँग भी क्या सकते हैं? इतना ही कहना बनता है कि :–

'ऐ माँ! तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी।
उसको नहीं देखा हमने कभी, पर उसकी ज़रूरत क्या होगी।।'

यह सब तभी सार्थक हो सकता है यदि हम इस महान आत्मा के पद-चिन्हों पर चल सकें। उनकी निजी साधना पूर्णतया लेखनीबद्ध हो चुकी है व क़दम-क़दम पर हमें पथ दर्शाती हैं। यदि जीव इस राह पर चलता जाये तो जीवनमुक्त हो सकता है। हमारे सम्मुख प्रमाण सहित ऐसी महान हस्ती है, जिसका पल-पल हम लाभ उठाते हैं।

जितना अमृतरस आज तक पान किया, उसके प्रति केवल कृतार्थता का भाव ही हो सकता है। मन कहता है -

'तोरी कृपा हुई है अपार, तेरा अंत मैं जानूँ न...'

परन्तु साथ ही पूज्य माँ के शब्दों में यह प्रार्थना भी है -

'इतनी विनती स्वीकार करो, बाक़ी पल यूँ ही बीतें।
तेरे चरण में ध्यान रहे अब से, बाक़ी घड़ियाँ यूँ ही बीतें।।' ❖

पूर्ण वस्तु रूप है जो,

हर रूप रे उसका है!

गतांक से आगे –

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः।
तस्मादेतद्ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते।।९।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - प्रथम खण्ड, ९ श्लोक

शब्दार्थः

जो सब कुछ तथा सबको जानने वाला है; जिसका ज्ञानमय तप है; उसी परमेश्वर से यह विराट रूप जगत तथा नाम रूप और भोजन उत्पन्न होते हैं।

तत्व विस्तारः

सर्वज्ञ वह सर्ववित्त वह, व्यष्टिकोण सों अब कहें।
व्यक्तित्व उसे दे करी, ज्ञान परिभाषा अब कहें।।१।।

ज्ञान स्वरूपा ही तप है, ज्ञानमय तप तुम कहते हो।
निर्गुणिया सगुण भये, माया सों रचे तुम रे कहते हो।।२।।

महा कारण परम कारण, कारण रहित कारण भये।
अक्षर ब्रह्म सगुण भये, संकल्प रूप वह बीज भये।।३।।

संकल्प बीज ही कारण है, सूक्ष्म रूप यही धरे।
सूक्ष्म सों रे स्थूल रूप, जान लो बस यह ही धरे।।४।।

संकल्प ही उसका तप रे है, प्रादुर्य हो ब्रह्माण्ड का हो।
हिरण्यगर्भ भी ही जानो, प्राकट्य ही जहान का हो।।५।।

हर नाम जो है हर वस्तु का, वह नाम रे उसका है।
पूर्ण वस्तु रूप है जो, हर रूप रे उसका है।।६।।

अन्न जो पुष्टि सबको दे, यह रूप भी उसका है।
नाम रूप यह अन्न भये, अन्न जन्म ही उसका है।।७।।

महाकारण अखण्ड रस, ईश्वर रूप रे धर आये।
प्रज्ञा कारण कर्माशय, सत्त्व वही तो कहलाये।।८।।

समष्टि व्यष्टि संस्कार, पूर्ण वा में समाये हैं।
अखिल नाम रे इस जग के, वह ही तो बनी आये हैं।।९।।

हिरण्यगर्भ वह आप बने, ईश्वर रूप भी आप ही है।
विराट रूप वह आप धरे, हर विश्व रूप वह आप ही है।।१०।।

प्रज्ञा वह अरे तैजस वह, अनेक रूप भी वह ही है।
भाव भरे वह भाव रहित, भाव भये भी वह ही है।।११।।

आनन्द अर्थ द्यू लोक, जीव लोक फिर आप ही है।
जो हो चुका जो हो रहा, जो होयेगा वह आप ही है।।१२।।

वाका तप रे ज्ञान है, वह ही सब कुछ जाने है।
अपने आपको आप में ही, रच कर सब कुछ जाने है।।१३।।

नाम रूप जो देख रहा, अधिभूत भी आप ही है।
अव्यक्त तत्व वह आप ही है, और व्यक्त वह फिर आप ही है।।१४।।

महाकारण वह कारण है, उत्पत्ति स्थिति भी है।
अज्ञान रूप वह आप धरे, अज्ञान की निवृत्ति भी है।।१५।।

नाम रूप उपाधि है वह, उपाधि से वह है परे।
अधिभूत अधियज्ञ भये, अधिदेव भी आप भये।।१६।।

सर्वज्ञ वह सर्वोपरि, सर्वश्रेष्ठ वह आप है रे।
सर्ववित्त सर्वज्ञाता वह, सर्व रूप आप है रे।।१७।।

सर्व रचयिता आप ही है, सर्व नियन्ता आप ही है।
ईषणकर्ता आप ही है, सर्वाधार वह आप ही है।।१८।।

अचिन्त्य वह अग्राह्य वह, अतीन्द्रिय तत्व इक वह ही है।
आकार रहित साकार वही, निराकार वह आप ही है।।१९।।

स्वयंभू वह प्रकटे है, आप में आप ही प्रकटे है।
आपको आप में लय करके, फिर पुनः आप में प्रकटे है।।२०।।

परिशुद्ध अमूर्त हो, मूर्त वह ही बन जाये।
सच तो यह वह आप में, आप ही सब कुछ बन जाये।।२१।।

परमानन्द वह परम मौन, शिव रूप वह आप ही है।
परम चेतन ज्ञान रूप, सत्त्व स्वरूप वह ही है।।२२।।

'अपर' ब्रह्म जिसे कहते हैं, जगत रूप वह आप ही है।
परब्रह्म अव्यक्त तत्व, अखण्ड रस वह आप ही है।।२३।।

उसको जिसने जान लिया, उसने सब ही जान लिया।
महा कारण जो जान लिया, उत्पत्ति स्थिति लय जान गया।।२४।।

परमेश्वर वह विश्वपति, विश्वात्म वह आप ही है।
अखिल रूप विश्वेश्वर, सर्वात्म वह आप ही है।।२५।।

सब जाने सब आप भये, आप आप में आप ही है।
आप आपको आप कहे, जानो आप रे आप ही है।।२६।।

भूमा वह महान रे है, त्रिकाल मूर्त वह ही है।
त्रिकाल रूप दर्शी भी, त्रिकाल परे वह ही है।।२७।।

परिपूर्ण इक वह ही है, आदिकारण वह ही है।
अविभक्त विभाजित हो, करे रे धारण वह ही है।।२८।।

बस रे उसको जान करी, ज्ञातव्य कुछ नहीं रहे।
आपको ही जिस पा लिया, प्राप्तव्य कुछ नहीं रहे।।२९।।

यही प्रश्न था शौनक का, संक्षिप्त विस्तार में कहा।
बीज रूप में देख ज़रा, पूर्ण जग रे धर दिया।।३०।।

ज्ञान रूप रे कारण में, साधक रमण कराते हैं।
सत्त्व सार वह जान ले, श्रेय पथ यह दिखलाते हैं।।३१।।

गुरु कृपा रे यह ही है, शौनक पर होने लगी।
याद रहे अरे शास्त्र कृपा, तो पहले ही हो चुकी।।३२।।

आत्म कृपा की राह कहें, पूर्ण उसको जान लो।
सर्वरूप वह आप ही है, राज़ यह पहचान लो।।३३।।

जहाँ तक अनुभव हो चुके, वहाँ तलक ले जाते हैं।
ज्ञान में जो भी पा सकें, विस्तृत करते जाते हैं।।३४।।

बुद्धि से वह है परे, यह भी देख बताते हैं।
ज्ञान स्वरूप वह ही है, भावन् में समझाते हैं।।३५।।

वही भये उसे जान ले, बिन भये न जान सके।
मौन अवस्था में ही रे, साधक उसे पहचान ले।।३६।।

अपर-पर तो कह आये, अरे इनसों उठना भी ही होगा।
'अपर' तो बहु दूर रहे, 'पर' सों भी उठना होगा।।३७।।

माया में यह मायिक है, माया ज्ञान यहाँ ज्ञान कहें।
परम सत्त्व जो दर्शाये, उसको ही रे ज्ञान कहें।।३८।।

जग का ज्ञान अज्ञान ही है, ज्ञान अज्ञान से वह परे।
वह ही उसको पा सके, दोनों सों जो उठ गये।।३९।।

भाव प्रवाह अरे नहीं रहे, बुद्धि जिस पल नहीं रहे।
ज्ञान स्वरूप वह आप भये, अखण्ड में वह अखण्ड भये।।४०।।

२४-८-६१

।। प्रथम खण्ड समाप्त।।

क्रमशः

प्रेम एहसान नहीं जताता!

श्रीमती पम्मी महता

सच ही कहा है आपने हे श्री हरि माँ, "शरणागत होने के लिये हमें हमीं से, यानि अपनी ही मान्यताओं से, अपनी ही create की (बनाई) हुई कुण्ठाओं से, अपनी 'मैं' के भावप्रवाह से एवं अपने संग, मोह, 'मैं-मम' के छलाव से रहित होना है!"

मगर इसे जानती कहाँ थी... पूर्णतया अनभिज्ञ थी... कर्तापन के भाव से, यानि 'मैं करती हूँ' इसे ही सत्य मान कर जीती थी। यही मेरे जीवन की यथार्थता थी। और भी कोई सत्य हो सकता है इससे पूर्णतया अनजान थी! गर हे श्री हरि नाथ, आप मेरे जीवन में न आते तो यह जीवन भी व्यर्थ ही हो जाता। व्यर्थ अर्थ दे कर जीना भी कोई जीना है... इसकी यथार्थता को तो तब जानी, जब आपने इससे परिचित ही नहीं कराया बल्कि इसकी मान्यताओं से भी इसे विलग करना शुरु किया!

या कहूँ, मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरु किया। इसे पूरी तरह erase करके... मुझे आप उस अनजानी डगर पर ले आये जहाँ मन, वचन, काया मोरी का हर रंग आपने

अपने प्रेमरंग में ढाल लिया। आपने अपने अमृतमय वचनों से, अपने अनुभवी जीवन से कैसे कैसे अनूठे व सुन्दर, अद्‌भुत व विलक्षण पाठ पढ़ाने शुरु किये कि इस परम सत्य का ज्ञान-विज्ञान आप मेरे हृदय दामन में भरने लगे..!

फ़ुर्सत ही कहाँ दी आपने कि मैं इधर उधर देखूँ... मेरी चाहनाओं को आप केवल अपनी ही एक चाहत से रंग रहे थे। 'मैं' जब तलक पूर्णतया आप पर केन्द्रित नहीं हो गई, मेरा चित्त आप में स्थिर नहीं हो गया, यह सिलसिला चलता रहा। मेरे सर्वस्व को सम्भाल कर आप ही मेरे कर्णधार बन गये। ऐसे में मन आप ही में स्थिर हो गया।

बुद्धि वह सभी ग्रहण करने लगी, जिसके लिये यह दिव्य प्रसाद था; जो आप माँ प्रभु जी मुझे ग्रहण करवा रहे थे। आपके जीवन का यह अद्‌भुत प्रवाह मेरे रोम-रोम में व्याप्त करने को, इस अग्राह्य को ग्रहण करवाने को, आप मुझे निरन्तर रिझाते ही चले गये... अद्‌भुत हर देन आपकी, इस आपकी कनीज़ को नवाज़े चली जा रही थी। आपके रूबरू होकर आश्चर्यचकित थी - आपके इस हृदय में उतर आने के परम सौभाग्य को आँखें मूंद कर व चकित हुई देखी देखी निहाल हुई जा रही थी आप पर!

हम किसी भी विकल्प को साथ लिये आप माँ प्रभु जी के श्री चरणन् पर अर्पित नहीं हो सकते। कहीं न कहीं 'मैं' होती है... क्योंकि संकल्प विकल्प 'मैं' कारण ही तो होता है। कर्त्ताभाव जब तलक पूर्णतया नहीं जाता तब तक समर्पण तो हो ही नहीं सकता।

माँ, आप मुझे कभी अपने ज्ञान के पहलू में उतार कर... जब मेरे माथे पे हल्की सी शिकन देखते, तो रास्ता बदल कर, मुझे दूसरे ढंग से समझाने लगते। जब वह भी मेरे अंतर में नहीं उतरता तो प्यार की भाषा में बतलाना शुरु कर देते एवं देखते मुझे कि कैसे खिल उठी हूँ मैं! सहज ही यह क़बूलने का जी करता - 'अढ़ाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पण्डित होये!'....

एक दिन आप माँ ने मुझे कहा, "पम्मी, मैं इंतज़ार कर रही थी कि तू कब इस प्रेम में उतर आयेगी!" कितने बरस सब्र किया आपने... कितनी तरह रिझाया व मनाया इसे आप श्री हरि माँ ने... इसका एहसास होता है तो हृदय कृतज्ञता से भरी भरी आता है। कैसे कैसे आप माँ ने, मेरी इंतज़ार करी... कैसे कैसे इतने सब्र के घूंट पीये जो यह भक्तित्व प्रेमभाव में उतर आये...

प्रेम एहसान नहीं जताता। वहाँ तो पूर्णतया ख़ामोश हैं आप! आपके हर पहलू में आपकी इतंहा देखी! मंद मंद मुसकुराते हुये, कैसे कैसे आप स्वयं को भुला कर दूसरे को अपना आप जान कर, चलते ही चले जाते... जब तलक उस सत्य पर उतर न आता वह, जिसे आप चलना सीखा रहे हैं।

आप कहा करते, "रेखा प्रवाह को मान लेना ही अर्पण है।"

जब अंतर पूरी तरह स्वीकार ले कि सब प्रभु का ही योजन-प्रयोजन है... चहुँ ओर विस्तार पाये हुये; जब यह भी तहेदिल से स्वीकार ले कि यह मेरो तन भी माँ प्रभु जी का ही यंत्र है : जब जिस रज़ा में रखें उसी में रहना आ जाये, उसी के हुकम में रहने की जिज्ञासा व चाव बढ़ता रहे, तब बाह्य से उठ कर मन मनोवासी हो जाता है। मन, अमन हो कर ही साधना नगरी बन जाता है। मनोनगरी से उठ कर बुद्धिवासी होने के बाद हर क्रिया, हर प्रवाह साधना ही हो जाती है! सभी प्रभुमय हो जाता है!

किसी भी वस्तु त्याग को त्याग नहीं कहते और न ही वह समर्पण है। हाँ, भाव त्याग ही समर्पण है। करण-कारण जब स्वयं प्रभु माँ हैं, तभी 'करण-कारण मैं हूँ' का नितांत अभाव होने पर ही समर्पण कहलाता है। फिर भगवान जी स्वयं यह भी दर्शाते हैं कि ऐसा साधक तनोप्रवाह को संग रहित होकर देखता है। प्रभु माँ के चरणन् पर समर्पित भाव से रहने लगता है।

परम पूज्य माँ के साथ
श्रीमती कमला भंडारी एवं श्रीमती पम्मी महता

माँ, आप ही की कृपा से तन, मन और जहान से परे होने का, आप ही से वरदान मिल जाता है। आप की कृपा से ही अपने प्रेमास्पद के होने की अनुभूति से नवाज़ा जाता है।

धन्य धन्य कही, धन्य कहूँ! फिर पुनि-पुनि धन्यवाद करूँ! आप माँ प्रभु जी ही तो निरपेक्ष व उदासीन अवस्था में ले आते हैं। लगता है कि चाहना, संग, मोह से पल ही में निवृत्त हो गई... नहीं! यह सत्य नहीं! वास्तव में, जो मेरे लिये बरसों से चले आ रहे हैं... वह तो आप माँ का तप है! आप ही की आराधना है! आप ही के, श्री राम जी के श्री चरणन् में, श्रद्धा व भक्तिपूर्ण सुमन हैं जिन्हें आप भेंटस्वरूप समर्पित करते हैं!

आप परम पूज्य माँ की वाणी का परम सत्य, "उसको भेजा राम ने, मुझे राम ही मिल गया..." कितना सुन्दर है! 'अपना' बिन कहे, अपने आराध्य को समर्पण की चाह... उस वाणी को भी सत्य सिद्ध किया! जैसे सच ही इसे आप ही ने भेज कर मुझे इसका प्रमाण देने का परम सौभाग्य दिया। यहाँ मेरी काया कल्प हो गई। इसी लिये, हे श्री हरि

माँ, आपकी व श्री राम जी की वन्दना अतीव विनीत भाव से करते हुये, अपने श्रद्धा सुमन भेंट करती हूँ! और तहेदिल से दुआ करती हूँ, 'यह कनीज़ आपकी, आपके श्री हरि चरणन् पर पूर्णतया अर्पित व समर्पित हो जाये!'

इसने तो हर पल आप ही के चलते क़दमों को देखा है, हे श्री हरि माँ! सब करते करवाते स्वयं आप ही हैं... इन्हीं आपके क़दमों का सदक़ा उतारते हुये यही दुआ व अनुनय-विनय करती हूँ कि अपने कारण इस मौक़े को गँवा न लूँ। इस आपकी अनमोल धरोहर को इस विध ख़र्चूं कि यह विस्तार पाती जाये... आप अनन्त प्रभु जी की, आप विभूति पाद माँ की यह वह अनमोल दौलत है जिसे पल पल ख़र्चते हुये ही बढ़ाना है!

सम्पूर्ण जगती के लिये भी यह कल्याण पथ खुला रहे, जैसे आप माँ प्रभु जी ने मेरे लिये खोला हुआ है... सम्पूर्ण जगती के लिये, हे दीनानाथ दिनेश, यही कल्याण पथ खोल दीजिये जिससे हम आप ही की ओर मुख करके चलें व चलते ही चले जायें! आप ही के हाथों सभी का कल्याण हो! स्वार्थ से उठकर सभी निःस्वार्थ भाव से व श्रद्धा भक्ति से इसी रहगुज़र को अपना लें... भगवद् कृपा यूँ ही सभी पर कृपापूर्ण रहे।

हे श्री हरि माँ, आपके अथक क़दमों को चूमते हुये शत शत प्रणाम देती हूँ! हे श्री हरि नाथ, जब आप ही आपसे सनाथ हुई हूँ तो आप ही बताइये कोई और तमन्ना क्या सर उठायेगी? जब जीवन आप ही की अमानत बन जाये तो हे सर्वप्रिय माँ प्रभु जी, आप ही के प्रति मेरा अर्पण व समर्पण हो जाये!

आप माँ ने तो मेरे लिये कभी अपना दामन बचाया ही नहीं! इसके विपरीत प्यार की डोर को निरन्तर मज़बूत ही करते चले गये... हे श्री हरि माँ आप ही से मंगलयाचना करती हूँ व विनम्र निवेदन है मेरा कि आप ही अपनी करुण-कृपा में ला इसकी पूर्णाहुति भी डलवा दीजियेगा जो सभी हवि हो जाये और आपकी यह नमानी कनीज़ आप ही आप में समाहित हो जाये!

हे श्री हरि माँ, आपने अपने स्पर्श मात्र से ही मेरे इस गहन अंधकार को स्वयं से दीप्तिमान किया है। हे ज्योति स्वरूप, अपनी ही ज्योत्सना से भरपूर करी, इसे अपने श्री हरि चरणन् पर अर्पित व समर्पित हो जाने दीजिये... जो आपके अनुराग के पराग से मेरा रोम-रोम व्याप्त हो जाये व यह आप ही के प्रति पूर्णतया समर्पित हुई रहे! आप ही की उज्जवल कांति से भरी रहे!

आप ही के करम से नवाज़ी गई हूँ, इसलिये सदैव आप ही के श्री चरणन् में इसे सदा सदा के लिये स्थान मिले... आपकी रहमतों का सदक़ा उतारते हुये, आप ही को सिजदे में धर करी सिजदे में आपके पड़ी रहूँ, जो इक रोज़ आप ही में विलीन होई आप ही में विराम पा जाऊँ! आमीन!

हरि ओऽम् ❖

कैसे ध्यान लगायें राम,
मोरे बस की बात नहीं।

पिता जी - अपने परिवार के साथ

पिता जी - साधक चाहे कैसा भी हो, योग करना चाहे, निष्कामी जीवन चाहे, ज्ञान योग चाहे अथवा भक्ति योग चाहे, उसके लिये एकाग्रचित्त होना ज़रूरी है। एकाग्रचित्त के लिये शास्त्र में ध्यान को साधन बताया है, परन्तु ध्यान कैसे आये?

मन के घोड़े घुमाते हैं, मन टिकने नहीं देता, दो क्षण को भी मन नहीं टिकता! कहा जाता है अभ्यास से एकाग्रचित्त होता है। परन्तु अभ्यास ही तो मुश्किल है... मुझे लगता है सद्भावना से एकाग्रचित्त होना सम्भव है। इसके लिये कोई गुरु चाहिये जो रोज़ना इस विषय में मार्गदर्शन कर सके? आपका इस विषय में क्या विचार है?

परम पूज्य माँ - राम राम.......

प्रश्न अर्पण -

बहु विधि अरे विविध विधि, कहो रे ध्यान लगाते हैं।
कर्मयोग भक्ति योग, या ज्ञान में रे खो जाते हैं।।

जहाँ पे ध्यान लगायें राम, वहीं पे ध्यान रे टिक जाये।
इन्द्रिय अश्व गर थमें नहीं, तो साधक वह रे किधर जाये।।

कैसे ध्यान लगायें राम, मोरे बस की बात नहीं।
गुरु मिले समझाये तो हो, पर 'मैं' के रे हाथ नहीं।।

कहो राम तुम क्या रे कहो, यह ध्यान सफल किस विध रे हो।
स्थूल सूक्ष्म कारण में, कहाँ पे कैसे क्योंकर हो।।

तत्व विस्तार -

समझ मना तेरा ध्यान तो, कहीं न कहीं पर होता है।
निरन्तर ही तेरा मन जानो, कहीं टिका ही होता है।।

उस टिकाव में योग रे ला, वह योग ही बन जायेगा।
वहाँ से 'मैं' को गर हटा, सत्त्व योग बन जायेगा।।

स्थूल में कर्मन् में टिके, गर रुचि कर्म में तेरी है।
बस इतना ही रे कहा करो, यह मेरी नहीं अरे तेरी है।।

ध्यान इसी में गर रहे, कर्त्ता राम है 'मैं' नहीं।
वह योग ही बन जायेगा, जिस कर्म में 'मैं' का नाम नहीं।।

गर प्रेम कहीं पे हो जाये, प्यार में ध्यान हो टिका हुआ।
याद रहे तोरा ध्यान तो रे, किसी में ही है टिका हुआ।।

मनोरुचि अरे मन का संग, मान अपमान न आने दे।
जग मुझको नहीं दोष दे, ऐसा भाव नहीं आने दे।।

राम को साक्षी बना करी, गर किसी से भी प्रेम करो।
जान मना वह सत्त्व बने, जब निज मन वहाँ पे न आये।।

प्रेम योग वह बन जाये, जब निज मन वहाँ पे न आये।
अपनी चाहना पूर्ति रे, प्रेमास्पद से न चाहे।।

गर सत्यता आ ही गई, वह प्रेम योग बन जायेगा।
गर सत्य ही तोरा प्रेम रे है, जहाँ हो योग कहलायेगा।।

ज्ञान की भी अब बात सुनो, गर ज्ञान में है रे ध्यान तेरा।
ध्ययन करो वा मनन हो, इसमें चित्त है टिका हुआ।।

तो उसमें भी कोई बात नहीं, साक्षी राम बनाइये।
वा दर्शन रे पाये करी, चित्त को देखे जाइये।।

पर ज्ञान पठन करी यह कहो, यह मेरा नहीं यह मैं नहीं।
वह ज्ञान योग कहलायेगा, कौन कहे यह ध्यान नहीं।।

मन का गुण है जान मना, निज रुचिकर की वह सोचे है।
जहाँ रुचि इस मन की हो, उसी का ध्यान यह धर ले है।।

उसमें लीला देख लो, जहाँ रुचि तेरी वहाँ ध्यान धरो।
केवल ध्यान में राम धरो, योग उसी को फिर कहो।।

पुनि समझ समझाऊँ मना, गर कर्म में रुचि रे तेरी है।
सत्यता इतनी गर भर दे, यह कर्म नहीं रे मेरी है।।

फल की चाहना छोड़ दे, नियोजक निज को न कहे।
नैष्कर्म संसिद्धि रे, इसी विधि अरे मिल जाये।।

सहज में प्रेम तो होता है, जहाँ प्रेम करे उसका रे बनो।
वह मेरा रे बन जाये, अस भावी रे नहीं बनो।।

गर प्रेम किया तो तूने किया, कोई करे करे या न भी करे।
गर ज्ञान दिया तो तूने दिया, कोई कान धरे या न भी धरे।।

जब लौ प्रेम रे 'मैं' करे, वह प्रेम योग नहीं हो सके।
'मैं' करे मेरे लिये, वह प्रेम कैसे हो सके।।

गर प्रेम करे तो मैंने किया, दूजा करे यह काहे कहो।
गर मैंने किया तू उसका बनो, वह मेरा बने यह काहे कहो।।

गर यह कहा वह मेरा बने, तो प्रेम का वहाँ कण नहीं।
वह सत्य रूपा प्रेम नहीं, वहाँ रे योग का कण नहीं।।

यह जान करी अब जीवन में, जहाँ ध्यान तेरा वहाँ योग करो।
साक्षी राम बनाये करी, अपने प्रेम को तोल रे लो।।

इसी विधि ही सत्त्व को, साक्षी बना के कर्म तोलो।
जहाँ भी रुचि रे तोरी है, उस ही जा पर मन तोलो।।

सहज स्थिति आ जायेगी, सहज ध्यान लग जायेगा।
प्रथम चेतन मन से करो, फिर वह मौन हो जायेगा।।

सो ध्यान लगाव की बात कहें, मस्तिष्क में ध्यान धरो।
अपने अंतर जो भी है, कहें उसे कभी देख तो लो।।

फिर दिनचर्या में देखो, जहाँ ध्यान वहीं देख रे लो।
जहाँ मन की है सहज रुचि, उस जा सत्यता देख तो लो।।

और कछु रे बात नहीं, ध्यान की बात है इतनी सी।
उसका ध्यान रे सहज लगे, जो माने बात बस इतनी सी।।

प्रेम करो तो करो करो, कोई रोक टोक की नहीं कहें।
पर कैसा प्रेम रे तेरा है, वा दर्शन ले तो देख सके।।

कैसी भावना तोरी है, नियोजित कर्म में जो करे।
निहित रुचि तोरी कौन है, योग से जो दूर करे।।

ज्ञान की भी यही बात है, किस कारण ज्ञान रे चाहते हो।
ध्यान ज्ञान में गर लगा, पूछो क्यों रे चाहते हो।।

गर हक़ीक़त उसे बनाना है, गर सत्यता को रे लाना है।
तो ज्ञान योग बन जायेगा, गर सच ही राम को पाना है।।

सो जहाँ तोरी है सहज रुचि, वहाँ पे ध्यान लगाइये।
स्वाभाविक कर्म जान मना, कबहुँ रे छोड़ न पाइये।।

जो अनुचित है इस पल रे, योग से छूट रे जायेगा।
जो काज तोरा उचित नहीं, वह तब कर नहीं पायेगा।।

सो गर कहे तू कर्म करे, सत्यता उसमें ले आओ।
गर कहे तू प्यार करे, योग वहीं पे ले आओ।।

गर कहे अरे ज्ञान भजे, सत्यता वहाँ पे ले आओ।
योग वहीं बस जायेगा, राम जहाँ पे ले आओ।।

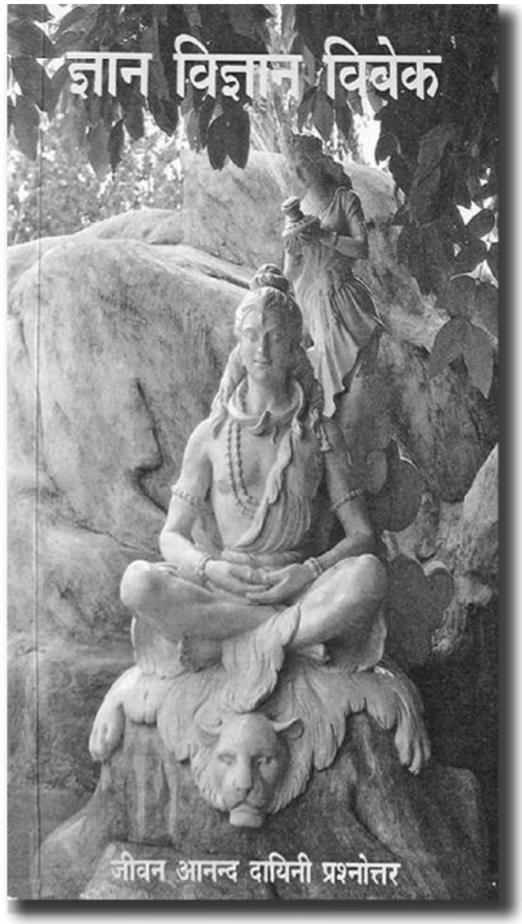

पिता जी द्वारा वेदांत पर आधारित प्रश्नोत्तर का संगलन
अर्पणा प्रकाशन - ज्ञान विज्ञान विवेक

पुनि समझ समझाऊँ मना, प्रेम की बात पुनि कहें।
सहज प्रेम तोरा जहाँ पे है, उसकी बात पुनि कहे।।

गर बुद्धि तोरी संग में है, इस पल की ख़ुशी न देखोगे।
इस पल वह रुठे चाहे, वह कभी न देखोगे।।

गर यूँ करूँ अपमान मिले, तुम मान की बात न देखोगे।
गर यूँ करूँ वह अपना भये, संबंध की बात न देखोगे।।

वह मुझे अपना कहे, अरे यह तब न देखोगे।
उस राही मैं पाऊँ राज्य, बस ये भी कभी न देखोगे।।

गर प्रेम किया वा ख़ुशी कहाँ, उसको वह ही दे दोगे।
वह ताड़े मारे तुझे छोड़ भी दे, तब भी तुम उसे दे दोगे।

जब जानो भूला देखोगे, मुझे छोड़ भी दे तो क्या हुआ।
प्रेमास्पद वह मेरा है, वह ख़ुशी कुछ पा लेगा।।

आधुनिक ख़ुशी कुछ न मिली, जन्म जन्म की पा लेगा।
मुझको उसने छोड़ दिया, फिर भी सत्यता पा लेगा।।

आपुनो ध्यान वह नहीं धरे, अपने आप को तोड़ वह दे।
आपुनो कुछ भी नहीं रहे, योगी को नहीं याद रहे।।

यह कहे यह रूठेगा, ऐसी बात नहीं याद रहे।
यह ही सत्यता तोरी है, ऐसी बात ही वह कहे।।

प्रेम में गर योग हो, वहाँ अपने योग की बात न हो।
प्रेमास्पद मोरा प्रेरित रहे, इस बिन और रे बात न हो।।

जन्म जन्म वह सुख पाये, जन्म जन्म आनन्दित हो।
विक्षेपकर वा वृत्ति जो है, किसी विधि रे मंजित हो।।

यह मान करी वह सहज ही, अपने आप को भूलेगा।
आपुनो मान अरे हानि लाभ, पूर्ण ही रे भूलेगा।।

प्रेम समझ है रे क्या, फिर रे प्रेम की बात करो।
साचो प्रेम रे गर करो, भक्ति योग यही तो हो।।

इसको समझ के जो भी करो, जहाँ ध्यान योग ले आइये।
जब लौ योग रे नहीं भये, राम ही कहते जाइये।।

राम राम–

पिता जी के प्रश्नोत्तर
सत्संग शास्त्र १९

...यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।५।।

एतान्यपि तु कर्माणि संगं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्।।६।।

श्रीमद्भगवद्गीता १८/ ५, ६

यहाँ भगवान अपना निश्चय बताते हुए अर्जुन को कहते हैं -

शब्दार्थ :

१. यज्ञ, तप और दान रूप कर्म
२. त्यागने योग्य नहीं है,
३. करने योग्य ही हैं, (क्योंकि)
४. निस्संदेह यज्ञ, तप और दान,
५. बुद्धिमान् पुरुषों को भी मानो पवित्र करने वाले हैं,

६. परन्तु ये कर्म भी,
७. संग और फलों को त्याग कर करने योग्य हैं,
८. ऐसा मेरा निश्चय किया हुआ उत्तम मत है।

तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं, यज्ञ, तप, दान त्याज्य नहीं हैं, क्योंकि ये तो :

क) ऋषिगण को भी पावन करते हैं।
ख) जीवन का आधार हैं।
ग) ब्रह्म का रूप हैं।
घ) पूर्ण सृष्टि की रचना ब्रह्म का यज्ञ ही है।
ङ) परम का अखण्ड मौन तप ही तो है।
च) सृष्टि में जीव को सब कुछ दे देना ही उसका दान है।

भगवान कहते हैं, यज्ञ, तप, दान तो सुख का आधार हैं। ये ही जीवन में इनसानियत के चिह्न हैं। ये तो पावन करने वाले हैं, यही तो पावनता का चिह्न हैं। परन्तु ये यज्ञ, तप, दान भी संग और फल का त्याग करके करने योग्य हैं।

संग त्याग से अभिप्राय:

१. कर्म से संग नहीं करना चाहिये।
२. इन कर्मों में भी 'मैं' का भाव नहीं होना चाहिये।
३. कर्तापन का अभाव होना चाहिए।
४. गुमान और अभिमान का अभाव होना चाहिये।
५. ममत्व भाव का अभाव होना चाहिये।
६. भोक्तृत्व भाव का अभाव होना चाहिये।
७. देहात्म बुद्धि का अभाव होना चाहिये।
८. तन भगवान का जान कर तनोकर्म करे।
९. कर्म भगवान का जान कर तनो कर्म करे।
१०. जिसके लिए कर्म किया, उसे भगवान का जान कर करे।
११. कर्ता, क्रिया, कर्म भगवान के हो जायें तो जानो कि संग गया।
१२. आत्म से संग हो जाये, तब यह संग मिटे।

संग क्या है :

संग संगम को कहते हैं, संग तद्‍रूपता, अनुराग, आसक्ति और एकरूपता को कहते हैं। संग मिलन को कहते हैं।

आत्मा और तन विजातीय हैं, एकत्व सजातीय का गुण है।

यज्ञ-तप-दान, तन, मन, बुद्धि के धर्म हैं, कर्तव्य हैं और उनका सहज स्वरूप हैं।

यदि संग नहीं होगा तो जीवन,

क) यज्ञ, तप, दान स्वरूप रह जायेगा।
ख) यज्ञ, तप, दान ही है।
ग) केवल परम विभूति ही रह जाता है।
घ) केवल परम का वरदान रह जायेगा।
ङ) सर्व कर्मफल त्यागी हो ही जायेगा।

यज्ञ, तप, दान

- दूसरे के लिए करते हैं,
- दूसरे को देते हैं,
- दूसरे को सहते हैं,
- अपनी आहुति देते हैं।

गर फल की चाहना है तो यज्ञ, तप, दान राजस अथवा तामस हैं।

निष्कामता ही सच्चे यज्ञ, तप, दान का स्वरूप है। निष्काम कर्म, निष्काम उपासना, निष्काम ज्ञान ही इनका स्वरूप है। भगवान कहते हैं, 'यही करना कर्तव्य है, यही करना चाहिए।' यही उनका निश्चित मत है।

देख मेरी जान! साधक की साधना

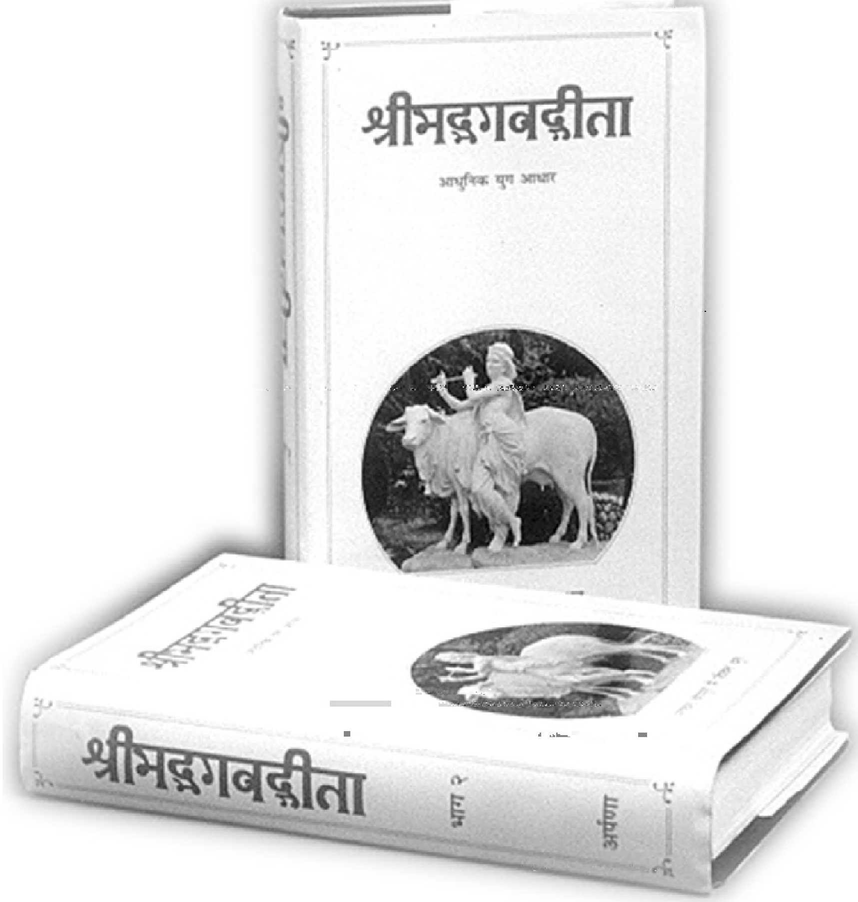

अर्पणा प्रकाशन - 'श्रीमद्भगवद्गीता' - *भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन*

यज्ञ, तप और दान ही है। तनोसंग तथा विषय संग के कारण,

१. जीव व्यक्तिगत हो जाता है।
२. दूसरे जीवों को भी नहीं देख सकता।
३. दूसरे जीवों का दुःख-दर्द भी नहीं समझ सकता।
४. दूसरे जीव भी उसके समान हैं, यह समझना भी कठिन हो जाता है।
५. दूसरे का भी मन है और उसकी रुचि आपसे भिन्न हो सकती है, यह आप नहीं समझते और पसन्द नहीं करते।
६. दूसरे की भी बुद्धि है और उसका निर्णय आपसे भिन्न हो सकता है, यह आप नहीं समझते और न सहन करते हैं।
७. दूसरे को भी ख़ुशी और मान चाहिए,
८. दूसरे की भी आरज़ू और आशायें हैं,
९. प्रेम और अन्य भी जो गुण आपको चाहियें, वे दूसरे को भी चाहियें, यह

आप नहीं समझ सकते।

जो इनसान सामने खड़े इनसान को नहीं देख सकता, वह भगवान को क्या समझेगा? गर तुम प्रत्यक्ष प्रकट वास्तविकता को नहीं देख सकोगे तो अप्रत्यक्ष, अव्यक्त तत्त्व को कैसे समझ सकोगे?

फिर परम के गुणों के व्यवहार का अभ्यास भी तो साधक को जीवों पर ही तो करना होता है!

तनत्व भाव के अभाव का प्रमाण भी जीवों से व्यवहार करते हुए ही मिल सकता है।

अहंकार, जीव पत्थर के साथ नहीं करता, अहंकार का प्रादुर्य अन्य जीवों से व्यवहार करते हुए होता है।

भाई! इसलिए यह अनिवार्य है कि आपकी साधना मानसिक तथा व्यावहारिक स्तर पर साथ साथ ही होती रहे। मानसिक ज्ञान की समझ आते आते जब साथ ही साथ जीवन में अभ्यास हो जायेगा, तब आपका ज्ञान विज्ञान सहित हो जायेगा।

शब्द ज्ञान से स्वरूप का पता चलता है तो यज्ञ, तप, दान से रूप उत्पन्न होता है। इसके परिणाम रूप ही स्वरूप में स्थिति हो सकती है। 'मैं' रूपा अशुद्धि को पावन करने वाले यज्ञ, तप, दान ही हैं; इसलिये इन्हें महा उच्चतम ऋषिगण भी नहीं छोड़ते।

क) तनत्व भाव से उठने के लिए दूसरे के तद्‌रूप हो जाना अनिवार्य है।
ख) अपने आपको भूलने के लिये निष्काम भाव से दूसरे के तद्‌रूप होकर कार्य करना अनिवार्य है।
ग) देहात्म बुद्धि को भूलने के लिए काम्यकर्म का त्याग अनिवार्य है।
घ) स्वरूप स्थिति पाने के लिए दूसरे में खो जाना, दूसरे का हो जाना और दूसरे के लिए जीना ही उच्चतम साधना है।

गर साधना पर दृष्टि रख कर दान करोगे तो आप याचक बनकर दूसरे का काज करोगे। यानि, आप अपने को दरिद्र रूप जान कर और ग़रीब को नारायण समझ कर दान दोगे। आप उसको धन्य कहोगे, जिसने आपके पाषाण मन में द्रवीभूतता उत्पन्न करी, जिसने आप से कुछ निकलवा लिया!

साधारण जीवों का दान तथा लोक सेवा पूज्य भाव से नहीं होते। वे अपने आपको :

१. श्रेष्ठ मान कर सेवा करते हैं।
२. धनवान मान कर सेवा करते हैं।
३. घमण्डपूर्ण होकर सेवा करते हैं।
४. अपने नाम के लिए सेवा करते हैं।
५. दूसरे को दरिद्र जान कर सेवा करते हैं।

भेद तो केवल इतना है कि यज्ञ, तप, दान में प्रधान कौन है? प्रेरक शक्ति की माँग क्या है? कौन दरिद्र है और कौन नारायण है?

साधक के दृष्टिकोण से, जिसे दान दिया जाये, वह नारायण होता है, असाधक के लिए जो दान दे, वह नारायण होता है। भाई! श्रेष्ठ तो सच ही वह है, जिसने आपकी इनसानियत को जगा दिया, वरना आप पत्थर ही रह जाते!

❖ ❖ ❖

श्रद्धांजलि

प्रिय बन्धुवर,

आज हम सब इस दिव्य मन्दिर में श्रीमती शीला कपूर अर्थात् हम सब के बड़े मम्मी के जीवन का उत्सव मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं।

वह एक बहु आयामी व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं। काव्य, लेखन, पठन और आध्यात्मिक विषयो में उनकी विशेष रुचि थी। यही परम पूज्य माँ के प्रति उनके तीव्र आकर्षण का आधार बना। परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से निःसृत गायन प्रवाह ने उनके हृदय को ऐसा वशीभूत किया कि उनका अधिकतम समय इसके अध्ययन में ही व्यतीत होने लगा।

उन दिनों पूज्य माँ का भगवान से एकाकी सम्बन्ध गंगा की उस तीव्रतम धारा के समान था जिसे राह का कोई पत्थर रोक नहीं सकता था। पूज्य माँ सब सांसारिक बन्धन पीछे छोड़ १९६२ में जब ऋषिकेश गये, तो गीता और उपनिषदों पर आधारित गायन प्रवाह के सब संकलन मधुबन में बड़े मम्मी के पास ही छोड़ गये। उस समय इनकी संख्या २१ थी - यही अर्पणा ट्रस्ट का मूल आधार हैं।

उनका प्रेमपूर्वक अध्ययन करने से श्रीमती शीला कपूर के मन में ऐसी प्रेरणा जगी कि उन्होंने अपनी सम्पत्ति में से कुछ भूमि इनके प्रचार व प्रसार के लिये ट्रस्ट को देने का निर्णय किया। इसमें इनकी माता श्रीमती कौशल्या देवी एवं इनके पुत्र और पुत्री भी सहयोगी रहे।

इनके प्रेमपूर्ण अनुरोध को परम पूज्य माँ भी अधिक देर तक टाल नहीं पाये। १९६५ में पूज्य माँ भी अपने परिकर सहित यहाँ मधुबन में आ गये, जहाँ उनके लिये ७ आवसीय कमरे भी तैयार थे...

यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि इस आश्रम की स्थापना व विस्तार इन्हीं के शुभ संकल्प का परिणाम है।

अर्पणा में हम सभी उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं एवं भगवान जी से उनकी आत्मा की परम शांति के लिए प्रार्थना करते हैं।

विष्णु प्रिया महता

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च २०१७

अर्पणा समाचार

उत्साहपूर्वक क्रिसमस मनाया गया

अर्पणा में बड़े उत्साहपूर्वक यह दिन मनाया गया, जब पादरी एवं नन्ज़ अर्पणा में अपने पसंदीदा भजन एवं कैरोल गाने के लिए आये। सुन्दर वार्तालाप के साथ साथ यीशुमसीह के अनुकरणीय जीवन को याद किया गया।

दिल्ली में अर्पणा परिवार ने प्रेम, कृतज्ञता और गर्मजोशीपूर्ण वातावरण में यह दिन मनाया। लगभग ५० मित्रों व परिवारजनों ने मिलकर सन् २००० में अर्पणा के बच्चों द्वारा किया गया नाटक 'Amal and the Night Visitors' का वीडियो देखा।

प्रस्तुति में दिखाया गया प्रेम और क्षमा का संदेश, आधुनिक समाज में व्याप्त भौतिकवाद और अलगाव को बेधते हुए ख़ुशी और शांति का महौल बनाने में सहायक है।

विश्व पुस्तक मेले में अर्पणा

नई दिल्ली में ७ से १५ जनवरी २०१७ को विश्वपुस्तक मेले का आयोजन किया गया जिसमें अर्पणा ने भी भाग लिया। यहाँ परम पूज्य माँ के द्वारा शास्त्रों के विस्तार में से प्रकाशित श्रीमद्भगवद्गीता, जपुजी साहिब, उपनिषद्, वेदांत पर आधारित प्रश्न एवं उत्तर जिज्ञासुओं के लिए उपलब्ध रहे।

संगीतमय प्रस्तुति में डॉ. ए के आनन्द द्वारा गाये गये भजन एवं उषा मंगेश्कर के गायन में ईशावास्योपनिषद् भी उपलब्ध थे। पूज्य माँ के प्रेरणादायक शब्दों से सुसज्जित हाथ के बने चित्र, कार्ड एवं बुकमार्क तथा अर्पणा द्वारा बनाया गया 'सर्वधर्म समान' का चित्र सबसे अधिक लोकप्रिय रहे।

हरियाणा ग्रामीण सशक्तिकरण

ग्राम सभाः सहभागितापूर्ण शासन के लिए एक महत्वपूर्ण मंच

दिसम्बर २०१६ एवं जनवरी २०१७ के आरम्भ में अर्पणा एवं स्वयं सहायता समूह के प्रशिक्षकों की २ टीमों द्वारा ग्राम सभाओं में सामूहिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए ५ गाँवों में सड़क पर होने वाले जीवंत नाटक प्रस्तुत किये गये।

८०० से अधिक महिलाओं एवं पुरुषों ने इन नाटकों को देखा एवं ग्राम स्तर पर ग्राम सभा के अभिशासन की जवाबदेही की महत्वपूर्ण भूमिका को समझा।

महिला सशक्तिकरण एवं विकलांग लोगों के लिये कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए अर्पणा IDRF (भारतीय विकास एवं राहतकोष USA) का हार्दिक आभारी है।

परिवर्तन की तीव्र धाराओं के साथ तालमेल

विमुद्रीकरण एवं नकदी की कमी के बाद अर्पणा तीव्रगति से परिवर्तन की धाराओं से जूझ रहा है।

८०० स्वयं सहायता समूहों की महिला सदस्यों को इस बदलाव के विषय में समझाने के साथ-साथ कैशलैस लेन-देन को नये आदर्श के रूप में बताया गया।

सरल, व्यावहारिक प्रशिक्षण से महिलाओं को कैशलैस परिवेश के लिए अर्पणा की टीम द्वारा तैयार किया गया। ३ दिन में ८३ गाँवों की ६५० से अधिक ग्रामीण महिलाओं ने ग्राम स्तर पर प्रशिक्षण सत्रों में भाग लिया जहाँ उन्हें चैकबुक भरने, NEFT form, ATM कार्ड के उपयोग के विषय में अवगत कराया गया।

अर्पणा अस्पताल

सरवाइकल एवं स्तन कैंसर शिविर

२७-२८ नवम्बर, ६-७ दिसम्बर और २०-२१ जनवरी को अर्पणा अस्पताल द्वारा **एशिया इनिशिएटिव्ज़** के संरक्षण में गाँव में गर्भाशय और स्तन कैंसर के शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें ४२७ महिलाओं की जाँच की गई। अर्पणा अस्पताल में स्वयंसहायता समूहों की महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिससे वे गाँवों में कैंसर की स्क्रीनिंग के प्रति जागरूकता बढ़ा सकें।

अपनी स्क्रीनिंग की प्रतीक्षा में...

दिल्ली के कार्यक्रम

'रिजॉयस'- अर्पणा सामुदायिक केंन्द्र

रिसर्चः परम पूज्य माँ द्वारा श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के अनूठे एवं मुक्तिदायक विस्तार पर चर्चायें की गईं। २ आध्यात्मिक नेताओं ने संभाषण दिये :

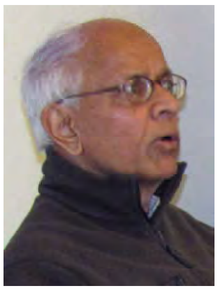

टी एस अनन्तू

नित्य शान्ति : 'दैनिक जीवन में तनाव' एवं 'देने एवं क्षमा द्वारा आनन्द प्राप्ति' के विषय में बात की। युवा दर्शक उनकी अंतर्दृष्टि से रोमांचित हो उठे।

टी एस अनन्तू : प्रख्यात शोधकर्ता, पर्यावरणविद् और विचारक ने 'Thinking, Creativity and the Creator' के विषय में बात की। कई विज्ञानिकों, इंजीनियरों एवं दर्शकों ने उनसे सवाल किये जिसमें बच्चों के विकास में रुचि रखने वाले माता पिता भी थे।

नित्य शान्ति

वसंत विहार में वंचित बच्चों के लिए ट्यूशन

अर्पणा द्वारा गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के लिए १६० स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के लिए ट्यूशन उपलब्ध करवाई जा रही है। उन्हें अर्पणा के प्रशिक्षक नये और प्रभावी ढंगों से अंग्रेज़ी, हिन्दी और गणित पढ़ाते हैं। जब उनकी नींव पक्की होगी तो बच्चे शैक्षिक सफलता के दिशा में बेहतर प्रगति करने में सक्षम होंगे। उन्हें संगीत और कला भी सिखाई जाती है जिससे उनके जीवन में रचनात्मकता, स्वतंत्रता और आनन्द ला सकें।

मोलरबंद

कार्यशाला में नाटकीय प्रदर्शन

श्रीमती सुषमा सेठ के संयोजन में 'नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' के द्वारा अर्पणा के शिक्षा केन्द्र में २२ दिसम्बर से ५ जनवरी तक १५ दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जहाँ 'स्वान पुराण' नामक नाटक प्रस्तुत किया गया। इसमें पाँचवी से आठवीं कक्षा के २५ लड़कों ने भाग लिया। इसमें नागरिक ज़िम्मेवारी के प्रति अनिच्छा से हमारे जीवन स्तर की गुणवत्ता - शारीरिक, मानसिक और स्थूल - के नुकसान को दर्शाया गया है। कार्यशाला का मुख्य लक्ष्य छात्रों की एकाग्रता को बढ़ाना तथा उनकी बेहतरी के लिए नवाचार और कल्पना से प्रतिभा का समग्र विकास करना था।

अर्पणा, वंचित लोगों के शिक्षा के कार्यक्रमों के समर्थन के लिए एस्सेल फाउंडेशन, अवीवा प्राइवेट लिमिटेड एवं केयररिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन, यूएसए, के प्रति गहरी कृतज्ञता प्रकट करता है।

हिमाचल में अर्पणा

किसानों की उत्पादक सहकारी समितियाँ

किसानों की उत्पादक सहकारी समितियों में गजनोई समिति में ५२ सदस्य हैं और बढ़िया कोठी समिति में १०४ सदस्य हैं। उन्होंने अपनी समितियों की आम बैठक में अध्यक्ष एवं कार्यकारी कमेटी का चुनाव किया। उन्होंने व्यावहारिक व्यापार की योजना के अन्तर्गत उच्च गुणवत्ता के बीजों और उपकरणों की सामूहिक खरीदारी पर बल दिया, साथ ही उपज के सामूहिक विपणन पर भी आम सहमति बनी। किसान मार्च २०१७ के बाद से सामूहिक विपणन शुरु कर देंगे।

हिमाचल में विकास के लिए टॉम सार्जेंट एवं टाइड्ज़ फाउंडेशन का विशेष आभार

डॉ. राहुल गुप्ता प्रारम्भिक कक्षाओं के ९६ छात्रों को सम्बोधित करते हुए

अर्पणा अस्पताल द्वारा कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

१२ फरवरी को अर्पणा एवं **दृष्टि फाउंडेशन** ने एक संयुक्त उद्यम के अन्तर्गत अर्पणा के अस्पताल में २ पाठ्यक्रमों का उद्घाटन किया। 'दृष्टि' एक कौशल प्रशिक्षण अकादमी है जिसे क्षेत्र कौशल परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त है। ये २ मास के पाठ्यक्रम आपातकालीन चिकित्सा के लिए तकनीशियन और जनरल ड्यूटी सहायक के लिए हैं जिसके ख़र्चे का वहन केन्द्रिय सरकार के द्वारा किया जायेगा। कोर्स पूरा होने पर अर्पणा द्वारा छात्रों को नौकरी दिलवाने में भी सहायता की जायेगी।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002
Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:
Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037
Send contributions in USA to:
Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249
Send contributions to Arpana Canada:
c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.
Arpana Hospital: 91-184-2380801, **Info & Resources Office:** 91-184-2390905
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**
Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: www.arpana.org www.arpanaservices.org

Arpana Ashram

Research

Publications & CDs

Arpana endeavours to share its treasure of inspiration – the life, words and precept of *Pujya Ma*, through the publication of books and cassettes.

Publications

गीता	Rs.300
कठोपनिषद् हिन्दी	Rs.120
श्वेताश्वतरोपनिषद्	Rs.400
केनोपनिषद्	Rs.36
माण्डूक्योपनिषद्	Rs.25
ईशावास्योपनिषद्	Rs.20
प्रश्नोपनिषद्	Rs.50
गंगा	Rs.40
प्रज्ञा प्रतिभा	Rs.30
ज्ञान विज्ञान विवेक	Rs.60
मृत्यु से अमृत की ओर	Rs.36
जपु जी साहिब	Rs.70
भजनावली	Rs.80
वैदिक विवाह	Rs.24
गायत्री महामन्त्र	Rs.20
नाम	Rs.15
अमृत कण	Rs.12
Lets Play the Game of Love	Rs. 400
Bhagavad Gita	Rs.450
Kathopanishad	Rs.120
Ish Upanishad	Rs.70
Prayer	Rs.25
Love	Rs.20
Words of the Spirit	Rs.12
Notes	Rs.10

Bhajan CDs

ईशावास्योपनिषद् (a deluxe 8 CD set)	Rs.2000
स्वरांजलि - भाग १ और २	Rs.175each
नमो नमा	Rs.175
उर्वशी भजन	Rs.175
हे राम तुझे मैं कहती हूँ - भाग १	Rs.75
गंगा (भाग १ और २)	Rs.75each
राम आवाहन	Rs.75
तुमसे प्रीत लगी हे श्याम	Rs.75
हे श्याम तूने बंसी बजा	Rs.75

For ordering of books, please address M.O./DD to: **Arpana Publications** (payable at Karnal). Kindly add Rs. 25 to books priced below Rs. 100 & Rs. 40 to books above Rs. 100 as postal charges

Arpana Pushpanjali

Hindi/English Quarterly Magazine

Subscription	Annual	3yrs.	5yrs.
India	130	375	600
Abroad	350	1000	1650

Advertisement	Single	Four
Special Insertion (Art Paper)	10,000	
Colour Page	3500	12,000
Full Page (b&w)	2000	6000
Half Page (b&w)	1200	4000

(Amounts are in Rupees)

Subscription drafts to be addressed tα **Arpana Trust (Pushpanjali & Publications)**

Delhi Contact Person:
Mr. Inderjeet Anand
E - 22 Defence Colony,
New Delhi 110024
Tel: 41553073

Donation cheques to be addressed to: Arpana Trust (payable at Delhi)

Arpana Trust *- Donations for Spiritual Guidance Activities, Publications, Scholarships and Delhi Slum Project. Regd. under FCRA (Regd, number 172310001) to receive overseas donations.*

Applied Research

Medical Services

In Haryana
- 130 bedded rural Hospital
- Maternity & Child Care
- Family Planning
- Eye Screening Camps
- Specialist Clinics
- Continuing Medical Education

In Himachal
- Medical & Diagnostic Centre
- Integrated Medical & Socio-Economic Centre

In Delhi Slums
- Health care to 50,000
- Immunisations
- Antenatal Care
- Ambulance

Women's Empowerment

Capacity Building
- Entrepreneurial activities
- Local Governance
- Micro-Planning
- Legal literacy

Self Help Groups
- Savings
- Micro credit
- Federation
- Community Health
- Exposure Visits

Gender Sensitization

Income Generation through Handicraft Training Skills

Child Enhancement

Education
- Children's Education
- Vocational Education
- Cultural Opportunities
- Day Care Centres
- Pre-school Care & Education

Health
- Nutrition Programme
- School Health Programme

In Delhi Slums
- Environment, Building Parks & Planting trees
- Housing Project
- Waste Management

Arpana Research and Charities Trust *Exempt U/S 80 G (50% deduction) on donations for the hospital & Rural Health Programmes. Regd. under FCRA (Regd. number 172310002) to receive overseas donations.*

Contact for Questions, Suggestions and Donations:

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Arpana Group of Trusts, Madhuban, Karnal - 132037, Haryana.
Tel: (0184) 2380801- 802, 2380980 Fax: 2380810 Email: at@arpana.org / Web site: www.arpana.org

All donation cheques/ DD to be addressed to : ARPANA TRUST (payable at Karnal)